DR. BHIM RAO AMBEDKAR COLLEGE

(University of Delhi)

Main Wazirabad Road, Yamuna Vihar, Delhi-110094, Phones: 22814126, Telefax: 22814747
Email: info@drbrambedkarcollege.ac.in; brambedkarcollege.du@gmail.com;
principal@drbrambedkarcollege.ac.in; www.drbrambedkarcollege.ac.in

drbrac @bhim_ambedkar brambedkarcollege DrBRAC DU DrBRAC DU

Ref: DRBRAC/PO/Press Release/2023-24/ Dated: 05.11.2023

प्रेस विज्ञप्ति

बाबा साहेब का महापरिनिर्वाण दिवस बने हमारे लिए प्रेरणा दिवस

दिल्ली के यमुना पार इलाके में अवस्थित दिल्ली विश्वविद्यालय के डॉ. भीमराव अम्बेकर महाविद्यालय में बाबा साहेब के परिनिर्वाण दिवस पर विचार-परिचर्चा का आयोजन किया गया . महाविद्यालय द्वारा आयोजित "डॉ. अम्बेडकरः उनका जीवन, उनका लक्ष्य" विषय पर आयोजित इस परिचर्चा में अतिथि वक्ताओं ने बाबा साहेब के जीवन-संघर्ष, अनवरत परिश्रम, राष्ट्र के प्रति समर्पण और लक्ष्य से जुड़े विविध प्रसंगों का एक बार पुनः स्मरण किया. इस मौक़े पर उपस्थित अतिथियों का औपचारिक स्वागत करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर आर.एन. दुबे ने बाबा साहेब से जुड़े उन प्रसंगों की चर्चा की जो आमतौर पर विस्मृत कर दिए गए हैं.

प्रोफेसर आर. एन. दुबे ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि जिन विपरीत परिस्थितियों में बाबा साहेब ने राष्ट्र के समक्ष मानदंड स्थापित किए, उन्हें बरक़रार रखना, हम सबका परम कर्तव्य है. सामाजिक रूढ़ियों से जकड़े हुए समाज के बीच लगातार अपमान सहते हुए उन्होंने जिस संविधान की रचना की, भारतीय रिजर्व बैंक की परिकल्पना की और औपनिवेशिक भारत में स्त्रियों के लिए मातृत्व अवकाश की माँग रखी, यह सब कर पाना आसान काम नहीं रहा. भाषा, भारतीयता और संस्कृति को लेकर उनके जो भी विचार रहे हैं वो आज भी सामाजिक परिवर्तन के लिए बेहद महत्वपूर्ण कारक हैं जिन्हें कि अपनाया जाना चाहिए.

डॉ. अम्बेडकर की शिक्षा संबंधी दृष्टिकोण पर बात करते हुए मुख्य अतिथि सुधीर चौधरी, पूर्व डीजीपी(हरियाणा) ने जोर देकर कहा कि हम जिस वर्ग को शिक्षा का महत्व समझाना चाहते हैं, उनके बीच इस समझ का विकास होना बेहद ज़रूरी है कि हमारे लिए शिक्षा ही सबसे बड़ी पूंजी है और इसके माध्यम से हम अपने साथ-साथ आनेवाली पीढ़ियों का भविष्य सुधार सकते हैं. बाबा साहेब की शिक्षा संबंधी नीतियों से गुज़रते हुए हमें इस बात की प्रेरणा मिलती है कि शिक्षा के संबंध में हमारा एक व्यावहारिक दृष्टिकोण हो जिसमें कि अपनी क्षमता की पहचान, जीवकोपार्जन के संसाधनों का विकास, मातृभाषा का विकास और कौशल क्षमता का विकास जैसी बातें शामिल हों. तकनीक का उपयोग इसे सिरे से करने की समझ विकसित हो कि वह वृहत्तर समाज के हितों का कल्याण कर सके.

बाबा साहेब करोड़ों लोगों की आशा की किरण हैं, उन्होंने मानव समुदाय के लिए जितना कुछ किया, वैसा कोई दूसरा अवतार लेकर ही संभव है. वो हमारे देश और मानवता के गौरव हैं. विशिष्ट अतिथि प्रोफेसर जी.एस. चौहान, संयुक्त सचिव, यूजीसी ने बाबा साहेब के कथन- शिक्षित बनो, संघर्ष करो और संगठित बनो को दोहराते हुए उनके जीवन संघर्ष की विस्तारपूर्वक चर्चा की और उन्हें दुनियाभर के लोगों के लिए आशा की किरण बताया. छात्रों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि शिक्षक समाज का सबसे शक्तिशाली व्यक्ति होते हैं, वो आपके भीतर सपने भरने का काम करते हैं, वही सपने देश के भविष्य बनकर जगमगाते हैं. बाबा साहेब के शिक्षकों ने उनके भीतर के सपनों को मरने नहीं दिया और वो दुनिया के लिए मिसाल बन पाए.